Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **कालीबंगा (Note-1)।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

कालीबंगा।

कालीबंगा सिंधु भाषा का शब्द है जो काली+बंगा (काले रंग की चूड़ियां) से बना है। काली का अर्थ काले रंग से तथा बंगा का अर्थ चूड़ीयों से है।

पुरातात्विक स्थल कालीबंगा, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। हनुमानगढ़ से कालीबंगा की दूरी 30 किलोमीटर है। यहां हड़प्पा सभ्यता के बहुत महत्वपूर्ण अवशेष मिले हैं। काली बंगा एक छोटा नगर था। यहां एक दुर्ग मिला है। प्राचीन द्रषद्वती और सरस्वती नदी घाटी वर्तमान में घग्गर नदी का क्षेत्र में सैन्धव सभ्यता से भी प्राचीन कालीबंगा की सभ्यता पल्लवित और पुष्पित हुई। कालीबंगा 4000 ईसा पूर्व से भी अधिक प्राचीन मानी जाती है। सर्वप्रथम 1952 ई में अमलानन्द घोष ने इसकी खोज की। बीके थापर व वीवी लाल ने 1961-69 में यहाँ उत्खनन का कार्य किया।

यहां हड़प्पाकालीन संस्कृति से जुड़े कई प्राचीन अवशेष मिले हैं लगभग 34 साल तक चली खुदाई के बाद, 2003 में 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' द्वारा इस स्थल की उत्खनन रिपोर्ट प्रकाशित की गई, जिसमें कहा गया है, कि 'कालीबंगा', उस समय के सबसे समृद्ध नगर हडप्पा की प्रादेशिक राजधानी हुआ करता था।

यहां खुदाई के दौरान सुरक्षा दीवारों से घिरे दो टीले भी मिले हैं, जो हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की ही तरह दिखने में हैं। इस प्राचीन स्थल को लेकर कुछ विद्वानों का तर्क है, कि यहां कभी सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी हुआ करती थी। पुरातत्व सर्वेक्षण से पता चलता है कि यहां कच्ची ईंटों की किलेबंदी भी की गई थी, जिसके उत्तर में प्रवेश द्वार था। कालीबंगा की प्राक्-सैंधव कालीन बस्तियों में प्रयुक्त होने वाली कच्ची ईंटों 30x20x10 सेमी आकार की होती थी। यहां से मिले मकानों के अवशेषों पता चलता है कि मकान कच्ची ईंटों से बनाए जाते थे ,पर नाली और कुएं में पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था।पुरातत्व सर्वेक्षण में इस बात का भी खुलासा हुआ है यहां हवन जैसी धार्मिक क्रियाएं भी हुआ

करती थीं। स्थल के दुर्ग टीले की दक्षिण दिशा में मिट्टी व कच्ची ईंटों के पांच चबूतरे मिले हैं, जहां से हवन कुण्ड के साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं। सर्वेक्षण में इस बात का भी पता चला है कि कालीबंगा दो भागों में बंटा हुआ था, एक नगर दुर्ग और दूसरा नीचे दूर्ग। यहां पाएं गए अवशेषों से पता चलता है कि यहां के भवन कच्ची इंटों के बने हुए थे।

राजस्थान के इस प्राचीन स्थल में हड़प्पा काल के कई अवशेष मिले हैं, जिसमें पत्थर की चूड़ियां भी शामिल हैं। कहा जाता है, उस समय यह स्थल चूड़ियों के लिए काफी प्रसिद्ध था। यहां खुदाई के दौरान पत्थर से बनी चूड़ियां बरामद की गई हैं। माना जाता है, कि यहां प्राप्त काली चूड़ियों की वजह से ही इस स्थल को कालीबंगा कहा गया। यहां से प्राप्त शैलखड़ी के मुहरें (सीले) और मिट्टी के छोटी मुहरें (सीले) महतवपूर्ण अभिलिखित वास्तुए थी। मिट्टी के मुहरों पर सरकंडे के छाप या निशान से यह पता लगता है कि इनका प्रयोग पैकिंग के लिए किया जाता होगा ।एक सील पर किसी आराध्य देव की आकृति अंकित है। यहां से प्राप्त मुहरे मेसोपोटामियाई मोहरों के

समकक्ष थी। साथ ही यहां हड़प्पाकालीन की मिट्टी के खिलौने, मवेशियों की हड्डी के अवशेष, बैलगाड़ी व पहिए, खुदाई के दौरान मिले। जिससे पता चलता है, कि यहां के लोग खेती करना जानते थे, साथ ही मवेशियों को भी पाला करते थे।

References: Internet & Competitive books.